STUDY ON AVAILABILITY AND USE OF DRINKING WATER

पेयजल उपलब्धता और उपयोग पर एक अध्ययन

Community Development Centre
Opposite Maharishi Vidya Mandir
Near Lodhi Hostel, Bhatera,
Balaghat

Phone: 07632 248040
E-mail: cdcindia@rediffmail.com
Website: www.cdcmp.org

स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता एवं उपयोग पर अध्ययन

परियोजना क्षेत्र लालबर्रा और वारासिवनी विकासखंड के 6 गॉवों में पेयजल की उपलब्धता तथा समुदाय द्वारा पेयजल के रखरखाव और उपयोग पर एक लघु अध्ययन सम्पन्न किया गया अध्ययन के मुख्य उददेश्य निम्नानुसार थे।

- पीने के पानी के स्रोत और पानी की उपलब्धता जानना ।
- समुदाय में पीने के पानी के रखरखाव पर जानकारी और वर्तमान व्यवहार का पता लगाना।
- स्थानीय स्वशासी ईकाईयों की भूमिका को जानना।
- पेयजल पर समुदाय के व्यवहार परिवर्तन के लिए संभावित हस्तक्षेप और रणनीति बनाना।

अध्ययन की आवश्यकता

सामूदायिक स्वास्थ्य पर स्थानीय स्वशासन की ईकाईयों की जवाबदेही पर कार्य करते हुए पेयजल को एक मुख्य घटक के रूप में देखा गया। क्योंकि अस्वच्छ पेयजल बीमारियों का एक महत्वपूर्ण कारण है। गॉवों में स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता अपने आप में एक बडा प्रश्न है। पेयजल के स्रोत जैसे हेंडपंप और कुॅए तो बना दिये जाते हैं पर उनके रखरखाव और प्रबंधन के बारे में कोई सोचता नहीं। गॉव में लोग भी पेयजल की शुद्धता के बारे में उस समय सोचेंगे जब पर्याप्त पेयजल उपलब्ध हो। कार्य के दौरान परियोजना के हस्तक्षेपों में लगातार पेयजल पर सूचनाएं और जानकारियॉ समुदाय में उपलब्ध करायी जाती रही हैं। पर क्या वास्तव में परिवर्तन दिखायी दे रहा है अथवा नहीं यह जानना भी आवश्यक है। साथ ही पेयजल के रखरखाव पर समुदाय के वर्तमान प्रचलित व्यवहार क्या हैं यह जानना भी आवश्यक था जिससे आगामी हस्त क्षेप की रणनीति बनायी जा सके। हम यह भी जानना चाहते थे कि मुख्य गॉवों से दूर बसे हुए टोलों और मुख्यतः आदिवासी समुदाय में प्रचलित व्यवहार और सुविधाओं की उपलब्धता कैसी है ? पंचायतें जिनके उपर शुद्ध पेयजल उपलब्धता की जवाबदेही होती है क्या वास्तव में वे अपनी भूमिका का निर्वहन कर पाती हैं। इन सब प्रश्नों के जवाब ढूंढने के उद्देश्य से यह अध्ययन किया गया।

अध्ययन का क्षेत्र, प्रतिदर्श चयन और आंकडों का संग्रहण

इस अध्ययन के लिए कम्युनिटी डेव्हलपमेंट सेंटर के परियोजना क्षेत्र के तीन दूर स्थित आदिवासी बहुल गॉव और स्वास्थ्य संरक्षक समिति के भी इसी तरह के तीन गॉव का चयन किया गया।

- अध्ययन हेतु जानकारियों के संग्रहण में इन गॉवों के सभी परिवारों को शामिल किया गया।
- अध्ययन हेतु एक प्रश्नावली बनायी गयी जिसका प्रयोग कर जानकारियों का संग्रहण किया गया, प्रश्नावली का स्वरूप विकल्पों पर आधारित था और सर्वेक्षण के दौरान उत्तरदाताओं को विकल्प बताकर उनकी राय जानी गयी।
- प्रत्येक गॉव में सर्वेक्षण के दौरान समूह चर्चा की गयी।
- आंकडों का संग्रहण गॉव में सभी परिवारों से प्रश्नावली के माध्यम से किया गया और अंत में संग्रहित आंकडों का विश्लेषण किया गया।

संग्रहित जानकारियों का विश्लेषण

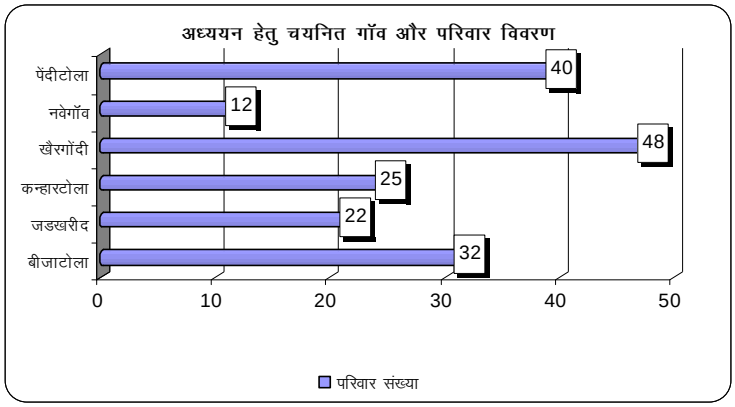

जैसा कि आगे वर्णित है इस अध्ययन को 6 गॉवों में किया गया। 6 गॉवों के कुल 179 परिवारों के साक्षात्कार लिए गये।

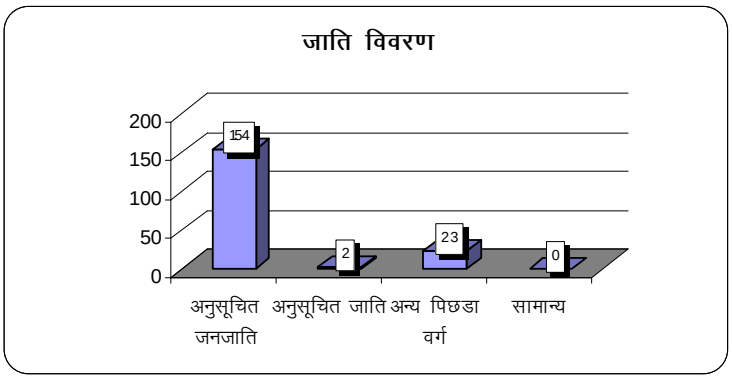

परिवारों का जाति आधारित वर्गीकरण : 179 परिवारों में 64 परिवार आदिवासियों के हैं और 23 परिवार अन्य पिछडा वर्ग से हैं।

सर्वेक्षित 179 परिवारों के आकार की बात करें तो एक परिवार में औसतन 5 सदस्य हैं। यह अध्ययन 6 गॉवों की 891 कुल जनसंख्या पर किया गया।

परिवार में कुल सदस्य	महिला	पुरूष
संख्या	437	454

सर्वेक्षित परिवारों में 122 परिवार गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करते हैं और 57 परिवार ऐसे हैं जो गरीबी रेखा से उपर हैं। इससे यह जानकारी तो प्राप्त होती है कि बहुसंख्यक परिवार संसाधन विहीन है और उनका जीवन स्तर भी न्यूनतम श्रेणी का है।

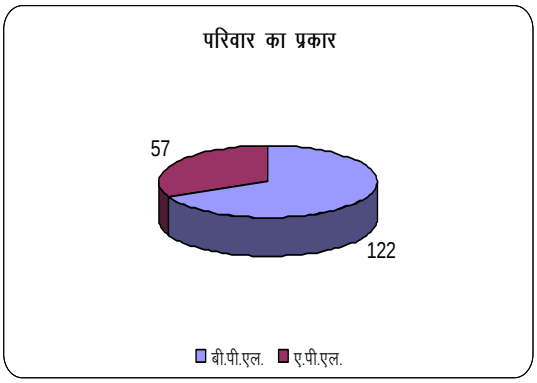

इन परिवारों के व्यवसाय की बात करें तो 113 परिवार कृषि कार्य करते हैं 65 परिवार मजदूरी करते हैं और केवल एक परिवार है जहॉ का सदस्य सरकारी नौकरी में है। इससे परिवारों की दैनिक जीवनचर्या का आंकलन किया गया। लगभग सभी परिवारों में लोग काम के लिए अधिक समय घर से बाहर रहते हैं।

व्यवसाय	मजदूरी	कृषि	सरकारी नौकरी	अन्य
परिवार संख्या	65	113	1	0

परिवार के पेयजल स्रोत

परिवार के पीने के पानी का स्रोत	हेंडपंप	कुंआ	नदी/ नाला	अन्य	दोनों
परिवार संख्या	121	54	0	3	1

सर्वेक्षित परिवारों के लिए पेयजल प्राप्ति के स्रोत को देखा जाये तो ज्ञात होता है कि 67 प्रतिशत परिवार हेंडपंप से पानी लाते हैं जो कि काफी सुरक्षित है। खुले कुंए के पानी का प्रयोग करने वाले परिवारों का प्रतिशत 30 है। यह काफी प्रभावित करने वाली बात है इन गॉवों में कोई भी परिवार नदी या नाले से पीने का पानी नहीं लेते हैं।

सर्वेक्षण में माना गया कि जो परिवार हेंडपंप से पीने का पानी लेते हैं वह कुछ हद तक सुरक्षित है और उन परिवारों से वे प्रश्न नहीं पूछे गये जो प्रश्न कुॅओं के पानी का प्रयोग करने वाले परिवारों से पूछा गया है।

कुंए के पानी का शुद्धीकरण

कुएं में ब्लीचिंग पावडर वर्ष में कितनी बार डाला जाता है	वर्ष में एक बार	वर्ष में दो बार	दो बार से अधिक बार	नहीं डाला जाता	परिवारों से पूछा गया कि क्या वे जिस कुंए से पानी लाते हैं उसमें ब्लीचिंग पावडर या अन्य कुछ पदार्थ डालकर पानी को शुद्ध किया जाता है। जिसमें निकलकर आया कि 70 प्रतिशत परिवारों ने कहॉ कि कुछ नहीं डाला जाता। जबकि 11 प्रतिशत परिवार ने वर्ष में एक बार और लगभग 3–3 प्रतिशत परिवारों ने दो या दो से अधिक बार ब्लीचिंग पावडर डालने की बात बतायी।
परिवार संख्या	37	10	10	65	

ब्लीचिंग पावडर कौन डालता है

कुएं में ब्लीचिंग पावडर कौन डालता है	पंचायत	ए.एन.एम.	आंगनवाडी	अन्य	पता नहीं	इस प्रश्न पर कि कुंए में ब्लीचिंग पावडर कौन डालता है ? 70 प्रतिशत लोगों को जानकारी नहीं है कि ब्लीचिंग पावडर कौन डालता है। 11 लोगों ने पंचायत, 14 ने आंगनवाडी और 8 लोगों ने ए.एन.एम. के बारे में बताया। पंचायतों की भूमिका इसमें महत्वपूर्ण साथ ही स्वास्थ्य विभाग को भी इसे देखना है पर ऐसी कोई व्यवस्था नहीं दिखायी देती जो नियमित तौर पर इस कार्य को करता हो।
परिवार संख्या	11	8	14	4	85	

पानी के स्रोत की दूरी

पानी के स्रोत की दूरी	50 से 100 मी. की दूरी पर	100 से 200 मी. की दूरी पर	200 से 300 मी. की दूरी पर	300 से 500 मी. की दूरी पर	500 मीटर से अधिक	परिवार जहॉ से पानी लाता है उसकी दूरी जानने पर पता चलता है कि सबके घर से पेयजल स्रोत 50 से 100 मी. की दूरी पर स्थित है। किसी भी परिवार को 500 मी. से अधिक दूरी तय नहीं करनी पडती है। यहॉ सामूहिक जवाबदेही तय करने की आवश्यकता है जिससे पेयजल स्रोत की साफ सफाई और अन्य व्यवस्थाएं समुदाय स्वयं निभाए।

पीने के पानी की आवश्यक मात्रा

परिवार में पीने और भोजन बनाने के लिए प्रतिदिन कितना पानी लगता है	10 लीटर	20 लीटर	30 लीटर	50 लीटर	परिवार में प्रतिदिन कितनी पानी की आवश्यकता है यह जानने पर पता चलता है कि औसतन एक परिवार को 30 लीटर पानी की आवश्यकता है और वे इतना पानी लाते हैं इसमें नहाने और अन्य उपयोग के लिए पानी की मात्रा शामिल नहीं है। 37 परिवारों ने कहॉ कि उनके यहॉ 50 लीटर तक पानी की खपत होती है । यह परिवार में सदस्यों की संख्या पर निर्भर करता है।
परिवार संख्या	61	45	34	37	

परिवार में पानी लाने की जिम्मेदारी

परिवार में पानी लाने की जिम्मेदारी किसकी है	महिला	पुरूष	बच्चे	ग्रामीण परिवेश के अनुरूप ही परिवार में पानी की लाने की जिम्मेदारी महिला की ही है, 151 परिवार में महिला ही पानी लाने का कार्य करती है। पुरूष केवल 23 और तीन परिवार ऐसे थे जहॉ बच्चे पानी लाने का कार्य करते हैं।
परिवार संख्या	151	23	3	

पानी संग्रहण करने के पात्र का विवरण

परिवार में पीने और भोजन बनाने के लिए पानी रखने का बर्तन	गुंडी	टंकी	बाल्टी	घडा	टंकी और गुंडी दोनों	115 परिवारों ने बताया कि वे अपने घर में पानी गुंडी में रखते है जो कि स्थानीय चलन है। 28 परिवार टंकी में पानी रखते हैं जो कि स्टील की बनी होती है जिसमें ढक्कन लगा होता है। चिंताजनक बात बाल्टी में पानी र खने वाले परिवारों की है क्योंकि बाल्टी ऐसा पात्र है जिसे पूरी तरह ढांका नहीं जा सकता। आश्चर्यजनक है मिटटी के घडे का चलन काफी कम हो गया है सिर्फ 9 परिवारों ने बताया कि वे घडे में पानी रखते हैं।
परिवार संख्या	115	28	17	9	8	

प्रश्न	हॉ	नहीं	विश्लेषण
पानी का प्रयोग करने के पूर्व क्या आप पानी को साफ करते हैं	106	71	यह विचारणीय है कि 40 प्रतिशत परिवार पानी का प्रयोग से पूर्व किसी तरह का उपचार नहीं करते हैं। 60 प्रतिशत परिवारों ने कहा तो है कि वे पानी को साफ करते हैं पर यह सिर्फ कपडे से छानने और कुछ परिवारों ने क्लोरीन की गोलियॉ डालने की बात कही है।
पानी ढांक कर रखते हैं	158	18	यह अच्छा व्यवहार है कि पानी ढांक कर रखा जाता है। 18 परिवारों ने बताया कि वे पानी को ढांक कर नहीं रखते।
पानी निकालने के लिए लंबी डंडी वाले पात्र का प्रयोग करते हैं	18	159	पानी निकालने की आदत में लोटा या गिलास ही शामिल है 90 प्रतिशत परिवार लंबी डंडी वाले पानी निकालने के पात्र का प्रयोग नहीं करते हैं। लोटा या गिलास से पानी निकालने पर निश्चित ही पानी निकालने वाले व्यक्ति की अंगुलियॉ पानी के अंदर जाती हैं। और जहॉ बच्चे स्वयं पानी लेकर पीते हैं वहॉ पानी के जल्दी दूषित हो जाता है।
पानी लाते समय ढांक कर लाते हैं	23	154	जैसी की सामान्य प्रक्रियाएं हैं पानी लाते समय लगभग 90 प्रतिशत परिवार पानी के बर्तन को खुला ही लेकर आते हैं। महिलाएं सिर पर र खकर पानी लाती हैं और उनका एक हाथ गुंडी या घडे को पकडने में पानी को भी छूता है।
क्या बच्चों को पानी हमेशा बडे लोग देते हैं	55	122	70 प्रतिशत परिवार में बच्चे स्वयं अपने हाथ से पानी लेकर पीते हैं बच्चों को भी पानी के रखरखाव की जानकारी नहीं है अतः वे असावधानी पूर्वक पानी लेते हैं और उसे दूषित करते हैं।
पीने का पानी प्रतिदिन लाते हैं	164	13	जैसी कि सामान्य सोच है ताजा पानी साफ होता है 90 प्रतिशत परिवार प्रतिदिन पीने का पानी लाते हैं।
पीने के पानी रखने के बर्तन को प्रतिदिन साफ करते हैं	160	17	प्रतिदिन पानी लाने से एक अच्छी बात यह होती है कि बर्तन रोज साफ किया जाता है।
जिस बर्तन में पीने का पानी रखते हैं उसका प्रयोग किसी अन्य कार्य में लिया जाता है	57	120	चिंताजनक स्थिति यह है कि जिस बर्तन में पीने का पानी रखा जाता है उसका प्रयोग अन्य कामों में किया जाता है। जैसे कपडे धोने, नहाने, लिपाई आदि के काम भी उसी पात्र से किये जाते हैं। सिर्फ 57 परिवार ही ऐसे थे जिन्होने बताया कि उनके घर में पीने के पानी का बर्तन अलग है।
पानी लाते समय आपका हाथ बर्तन के अंदर होता है अर्थात पानी से आपके हाथ का संपर्क होता है	109	67	पानी लाते समय लाने वाले के हाथ पानी के अंदर होता है ऐसा 62 प्रतिशत परिवारों ने बताया।
पीने का पानी लाने का बर्तन और अन्य प्रयोग के पानी लाने का बर्तन एक ही है	85	91	यहॉ स्पष्ट है कि प्रायः सभी घरों में पीने के पानी के बर्तन का प्रयोग अन्य कार्यों में किया जाता है।
क्या आपके परिवार में पिछले एक वर्ष में किसी सदस्य को दस्त की बीमारी हुई थी	83	95	प्रश्न दस्त की बीमारी होने का ही पूछा गया था और लगभग आधे परिवा. रों ने बताया कि पिछले एक वर्ष में उनके यहॉ कोई ना कोई सदस्य दस्त की बीमारी से पीडित हुआ था। यदि और बीमारियों को शामिल किया जाता तो यह प्रतिशत और बढ़ सकता था।
कौन बीमार हुआ था			• 15 वर्ष से अधिक आयु के सदस्य : 37 परिवार • 15 वर्ष से कम आयु के सदस्य : 45 परिवार

इस अध्ययन से कुछ बातें स्पष्ट रूप से सामने आती हैं कि ग्रामीण समुदाय में अभी भी पेयजल की ओर गंभीरता से नहीं देखा जाता। पानी में होने वाली गंदगी और पानी कैसे प्रदूषित होता है यह जानकारी नहीं है। यह ठीक है कि हेंडपंप का पानी काफी घरों को प्राप्त होने लगा है पर यह पानी भी शुद्ध है नहीं कहा जा सकता क्योंकि हेंडपंप से घर का सफर करने में ही पानी दूषित हो जाता है या घर के अंदर प्रयोग के दौरान भी पानी प्रदूषित होता है। समुदाय में पानी के उपयोग पर यह प्रचलित व्यवहार जोखिमपूर्ण हैं। अध्ययन में सिर्फ दस्त की बीमारी से पीडित परिवारों को जानने का प्रयास किया गया जिससे स्पष्ट हुआ है कि आधे परिवार हैं जिनके घर में कोई ना कोई सदस्य दस्त से बीमार हुआ था। दस्त की एक वजह दूषित पानी का प्रयोग भी है, आदिवासी समुदाय इन सभी बातों से अनभिज्ञ सा दिखायी देता है।

पानी के रखरखाव के तौर तरीके भी चिंताजनक हैं सबसे चिंताजनक बात पीने के पानी के लिये प्रयोग किये जा रहे पात्रों का अन्य कार्यों में उपयोग किया जाना, क्योंकि यह निश्चित नहीं है कि इस काम के लिए इस बर्तन का प्रयोग नहीं किया जाना है और इसके लिए करना है। जानकारी का आभाव है और साथ ही व्यक्तिगत व्यवहार में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है।

अनुशंसाएं

परियोजना द्वारा किये गये इस छोटे से अध्ययन से काफी बातें निकल कर सामने आती हैं जिन पर आगामी वर्ष में कार्य करने की आवश्यतकता है। जैसे :

- पंचायतों को पेयजल व्यवस्था के साथ साथ पेयजल स्रोतों के शुद्धीकरण पर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना। साल में कम से कम दो बार पंचायत प्रतिनिधियों को गॉव के समस्त पेयजल स्रोतों का भ्रमण करवाना और स्थिति से अवगत कराना।
- समुदाय को अपने पेयजल स्रोतों के व्यवस्थित प्रयोग हेतु जागरूक करना और उनके प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपना।
- शालाओं में बच्चों को पेयजल और उसके स्वच्छतापूर्वक उपयोग सिखाने पर बल देना। पानी निकालने के लिए लंबी डंडी के पात्र के प्रयोग को बढ़ावा देना।
- महिलाओं को पानी के उपचार पर प्रशिक्षित करना और उन्हें समझाना कि पानी लाते समय वे क्या क्या सावधानियॉ अपना सकती हैं।
- आंगनवाडी कार्यकर्त्ता, ए.एन.एम. और आशा कार्यकर्त्ता को जिम्मेदारी सौंपना कि वे टीकाकरण के अलावा इन विषयों पर भी जानकारी दें। साथ ही क्लोरीन की गोलियॉ या ब्लीचिंग पावडर की उपलब्धता सुनिश्चित करायें।
- ग्राम स्वास्थ्य समिति की कार्ययोजना बनाये जिससे समितियॉ पंचायतों के साथ बेहतर तालमेल बनाकर पेयजल पर जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करें और लोगों के व्यवहार में परिवर्तन लाने पर कार्य करें।